Toppersnotes®
Unleash the topper in you

REET

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

Board of Secondary Education, Rajasthan (RBSE)

भाग - 5

Level - II (कला वर्ग)

राजस्थान का इतिहास एवं कला संस्कृति

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्रोत	1
2	राजस्थान का प्रारम्भिक इतिहास और राजपूतों की उत्पत्ति	9
3	मेवाड़ का इतिहास	12
4	राठौड़ राजवंश और मारवाड़ का इतिहास	27
5	गुर्जर प्रतिहार वंश व परमार वंश	37
6	चौहानों का इतिहास	42
7	आमेर का इतिहास (कच्छवाहा वंश)	54
8	जैसलमेर का भाटी वंश	65
9	करौली–भरतपुर का इतिहास	69
10	राजस्थान और 1857 का विद्रोह	72
11	प्रजामंडल आंदोलन	80
12	राजस्थान में जनजातीय आंदोलन	89
13	राजस्थान में किसान आंदोलन	93
14	राजस्थान का राजनीतिक एकीकरण	100
15	प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी एवं व्यक्तित्व	108
16	राजस्थान के मेले और त्योहार	123
17	राजस्थान की हस्तशिल्प कला	135
18	राजस्थान की चित्रकला	143
19	राजस्थान के लोक नृत्य	154
20	राजस्थान के लोक नाट्य	161
21	राजस्थान के संत और लोक देवी – देवता	166
22	राजस्थान के लोक संगीत और वाद्य यंत्र	179
23	राजस्थान स्थापत्य एवं शिल्प कला	189

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	राजस्थान के आभूषण एवं वेशभूषा	212
25	राजस्थानी भाषा एवं बोलियाँ	218

1 CHAPTER राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्रोत

- **राजस्थान इतिहास के जनक** - कर्नल जेम्स टॉड ।
  - वर्ष 1818 से 1821 ई. के मध्य **मेवाड़** (उदयपुर) प्रांत के **पोलिटिकल एजेन्ट** थे।
  - इन्हें लोग **घोडे वाले बाबा** कहते थे।
  - **एनल्स एण्ड एंटीक्वीटीज ऑफ़ राजस्थान/ सेन्ट्रल एण्ड वेस्टर्न राजपूत स्टेट ऑफ इंडिया** - लन्दन में वर्ष 1829 में प्रकाशन ।
  - गौरी शंकर हीराचन्द ओझा - **सर्वप्रथम हिन्दी अनुवाद**।
  - **अन्य पुस्तक** - ट्रेवल इन वेस्टर्न इण्डिया
  - **मृत्यु पश्चात वर्ष** 1837 में पत्नी द्वारा **प्रकाशन** ।
- **राजस्थान** में पुरातात्विक सर्वेक्षण कार्य सर्वप्रथम (1871 ई) प्रारम्भ करने का **श्रेय ए.सी.एल. कार्लाइल** को जाता है।

[L.S.A. 2016]

राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्त्रोत

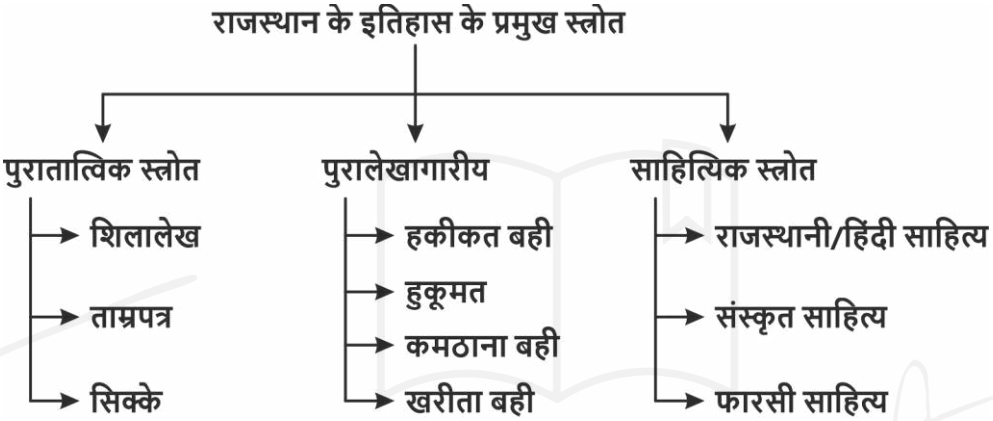

शिलालेख

रायसिंह प्रशस्ति (बीकानेर 1594 ई. में) [Const – 2018]	• प्रशस्तिकार- जैन मुनि जैइता। • इसमें राव बीका से लेकर राव रायसिंह तक के बीकानेर के शासकों की उपलब्धियों का वर्णन है । • इसके अनुसार बीकानेर दुर्ग का निर्माण 30 जनवरी, 1589 से 1594 ई. तक राव रायसिंह ने अपने मंत्री करमचंद द्वारा पूरा करवाया था।
मंडोर अभिलेख (837 ई में जोधपुर)	• यह गुर्जर नरेश बाउक की प्रशस्ति है। • इस में गुर्जर प्रतिहारों की वंशावली, विष्णु एवं शिव पूजा का उल्लेख किया गया है।
सच्चियाय माता की प्रशस्ति (1179 ई. ओसिया, जोधपुर)	• सच्चियाय माता के मंदिर, में उत्कीर्ण किया गया है। • इसमें कल्हण को महाराजा एवं कीर्तिपाल को मांडव्यपुर का अधिपति बताया गया है।
बिजौलिया शिलालेख [BCI – 2022/ Agri of - 2021/[PTI -2018/CET - 2023	• 1170 ई. में इसे बिजौलिया के पार्श्वनाथ मन्दिर परिसर की एक बड़ी चट्टान पर संस्कृत में उत्कीर्ण किया गया। • इस अभिलेख की स्थापना जैन **श्रावक लोलक द्वारा** कराई गई थी तथा इसके लेखक **कायस्थ केशव** थे। • रचयिता- गुणभद्र। • इसमें सांभर व अजमेर चौहानों को **वत्सगोत्रीय ब्राह्मण बताते** हुए वंशावली दी गई है। • चौहान राजा सोमेश्वर के शासन काल में • जाबालिपुर (जालौर), शाकम्भरी, श्रीमाल जैसे प्राचीन नगरों का उल्लेख है

घटियाला अभिलेख (861 ई.) [Lab Ass – 2022/VDO Mains – 2022/2nd Grade - 2023]	• प्रतिहार राजा – कक्कुक • मंडोर (जोधपुर) • भाषा – संस्कृत • आभीरो पर विजय • मग' जाति के ब्राह्मणों का उल्लेख
बसंतगढ़ अभिलेख (625 ई. सिरोही)	• यह बसंतगढ़ (सिरोही) के क्षेमकरी (खिमेल) माता मंदिर से प्राप्त हुआ है। • यह अर्बुद देश के राजा वर्मलात के सामंत रज्जिल तथा रज्जिल के पिता वज्रभट्ट (सत्याश्रय) का वर्णन करता है। • इस अभिलेख में राजस्थान शब्द का प्राचीनतम प्रयोग **'राजस्थानीयादित्य' के रूप में किया गया है।**
चिडवा\चिरवा का अभिलेख (1273 ई. \ वि.सं. 1330 उदयपुर) [Patwar – 2016/JEN(Agri)-2022]	• **प्रशस्तिकार** – रत्नप्रभ सूरी • **इसके शिल्पी** – देल्हण • **भाषा -संस्कृत** • गुहिल वंशीय बप्पा के वंशधर पदम सिंह, जैत्र सिंह, तेज सिंह और समर सिंह की उपलब्धियो का उल्लेख • एकलिंगजी के अधिष्ठाता पाशुपत योगियों के अग्रणी शिवराशि का भी वर्णन किया गया है।
अपराजित का शिलालेख [Raj Police – 2018]	• 661 ई. में उदयपुर जिले के नागदे गाँव के निकट कुंडेश्वर मंदिर की दीवार पर अंकित किया गया। • रचयिता - दामोदर • 7वीं सदी के मेवाड़ के इतिहास की जानकारी।
सामोली अभिलेख (646) (उदयपुर)	• इसके अनुसार वटनगर (सिरोही) से आये हुए महाजन समुदाय के मुखिया जैतक महत्तर ने अरण्यवासिनी देवी (जावर माता का) मंदिर बनवाया था। • जैतक महत्तर ने 'बुक' नामक सिद्धस्थान पर अग्नि समाधि ले ली। • यह अभिलेख जावर के निकट अरण्यगिरी में ताँबे व जस्ते के खनन उद्योग की जानकारी देता है।
आमेर का लेख (1612 ई**)**	• इसमें कछवाहा वंश को **रघुवंशतिलक"'** कहकर संबोधित किया गया है। • इसमें पृथ्वीराज एवं उसके पुत्र भगवानदास और उसके पुत्र महाराजधिराज मानसिंह के नाम क्रम से दिए गए हैं।
भाब्रू शिलालेख	• यहाँ अशोक मौर्य के 2 शिलालेख मिले हैं • यह 1837 ई. में "बीजक की पहाड़ी से कैप्टन बर्ट द्वारा खोजा गया था। • वर्तमान में यह कलकता संग्रहालय में रखा है। • इससे अशोक के बुद्ध धर्म का अनुयायी होना सिद्ध होता है। • इसे मौर्य सम्राट अशोक ने स्वयं उत्कीर्ण करवाया था।
घोसुण्डी शिलालेख [ARO-2022/Agri Sup – 2021 /2nd Grade - 2022/Lab Ass - 2022]	• घोसुण्डी, चित्तौडगढ़ से प्राप्त हुआ। • भाषा -संस्कृत, लिपि- ब्राह्मी | • सर्वप्रथम डी. आर. भंडारकर द्वारा पढ़ा गया। • **वैष्णव या भागवत** संप्रदाय से संबंधित। • एक बड़ा खण्ड उदयपुर संग्रहालय में सुरक्षित | • अश्वमेध यज्ञ करने और विष्णु मंदिर की चारदीवारी बनवाने का वर्णन है।
नगरी का शिलालेख (200-150 ई.पू)	• ब्राह्मी लिपि में संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण किया गया है। • इसकी लिपि घोसुण्डी के लेख से मिलती है। • घोसुण्डी शिलालेख नगरी शिलालेख में जुड़वा अभिलेख| • राजस्थान वर्तमान में राजस्थान के उदयपुर संग्रहालय में स्थित।
मानमोरी का शिलालेख (सन 713 ई.) [वनपाल -2022/JEN -2019]	• मौर्य वंश से सम्बंधित यह लेख **चित्तौड के पास मानसरोवर** झील के तट से कर्नल टॉड को मिला था। • इसका प्रशस्तिकार **नागभट्ट का पुत्र पुष्य** है और उत्कीर्णक करुण का पौत्र **शिवादित्य** है। • चित्रांगद मौर्य का उल्लेख है जिसने चित्तौडगढ़ का निर्माण करवाया। • कर्नल जेम्स टॉड ने इसे इंग्लैंड ले जाते समय असंतुलन की वजह से समुद्र में फेंक दिया था। • इसमें भीम को अवन्तिपुर का राजा बताया है।

राज प्रशस्ति (1676 ई./वि.स. 1732) [Lab Ass - 2022/JEN 20/22 जेल प्रहरी -2018	• प्रशस्तिकार- रणछोड़ भट्ट तैलंग द्वारा। • महाराणा राजसिंह सिसोदिया के समय स्थापित करवाया गया था। • यह राजसमन्द झील की 9 चौकी की पाल पर 25 श्लोकों में उत्कीर्ण विश्व की सबसे बड़ी प्रशस्ति है। • इसमें बापा रावल से लेकर राणा जगतसिंह द्वितीय तक की गुहिलों की वंशावली है। • इसमें महाराणा अमरसिंह द्वारा की गई **मुगल मेवाड संधि** का वर्णन है।
कुम्भलगढ़ शिलालेख (1460 ई.) [जेल प्रहरी – 2017]	• प्रशस्तिकार उत्कीर्णक /- कवि महेश • राजस्थान के राजसमंद जिले के कुम्भलगढ़ दुर्ग में स्थित कुम्भश्याम मंदिर में स्थित पाँच शिलाओं में उत्कीर्ण है। • इसमें बाप्पा रावल को **विप्रवंशीय** बताया गया है। • इसमें हम्मीर का चेलावाट जीतने का वर्णन है और **उसे विषमघाटी पंचानन** कहा गया है। • उदयपुर संग्रहालय में सुरक्षित है।
कीर्तिस्तंभ प्रशस्ति (1460 ई.) [Forest Guard-2022]	• **प्रशस्तिका**र- महेश भट्ट • **रचयिता**- अत्रि और महेश • यह राणा कुम्भा की प्रशस्ति है। • इसमें राणा कुम्भा को महाराजाधिराज, अभिनव भरताचार्य, हिन्दू सुरताण, रायरायन, राणो रासो छापगुरु, दानगुरु, राजगुरु, शैलगुरु आदि के नाम से संबोधित किया गया है। • इसमें मालवा और गुजरात की संयुक्त सेनाओं को कुम्भा द्वारा पराजित किये जाने का वर्णन किया गया है।
रणकपुर प्रशस्ति (1439 ई. या वि.सं. 1496), पाली	• इसे रणकपुर के चौमुखा मंदिर में उत्कीर्ण करवाया गया । • **प्रशस्तिकार** - दैपाक • मेवाड के राजवंश एवं भरणक सेठ के वंश का परिचय मिलता है। • बप्पा एवं कालभोज को अलग- अलग व्यक्ति बताया गया है। • गुहिलों को बाप्पा रावल के पुत्र बताया गया है।
जगन्नाथराय प्रशस्ति	• प्रशस्तिकार - कृष्णभट्ट • इसमें बाप्पा रावल से लेकर जगतसिंह सिसोदिया तक गुहिलों का वर्णन है। • यह उदयपुर के जगन्नाथ राय मंदिर में स्थित है। • प्रताप के समय लड़े गए हल्दीघाटी के युद्ध का वर्णन किया गया है। • प्रशस्ति के अनुसार महाराणा ने पिछोला के तालाब में मोहन मंदिर बनवाया और रूपसागर तालाब का निर्माण करवाया।
श्रृंगी ऋषि का शिलालेख (1428 ई. उदयपुर)	• मोकल द्वारा कुण्ड बनाने और उसके वंश का वर्णन किया गया है। • रचनाकार कविराज वाणी बिलारा योगेश्वर
बरनाला अभिलेख (278 ई.) [Statistical Officer- 2021]	• वैष्णव सम्प्रदाय • जयपुर

अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ

नाम	स्थान	काल	विवरण
बडली \बरली का शिलालेख [PRO-2019/JEN-2022	अजमेर (भिलोट माता के मन्दिर से)	दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व	• राजस्थान का प्राचीनतम शिलालेख • ब्राह्मी लिपि • वर्तमान में अजमेर संग्राहलय में सुरक्षित है।
नान्दसा यूप स्तम्भ लेख	भीलवाड़ा	225 ई.	• सोम द्वारा स्थापना
बड़वा यूप अभिलेख [Patwar -2016/JEN (Agri) -2022]	कोटा (बडवा गाँव में)	238-39 वि.सं./ 181 ई. में	• भाषा - संस्कृत एवं लिपि ब्राह्मी • मौखरी राजाओं का वर्णन मिलता है सबसे पुराना और पहला अभिलेख । • तीन यूप (स्तंभ) पर उत्कीर्ण है ।
भ्रमरमाता का लेख	चित्तौड़	490 ई.	• गौर वंश और औलिकर वंश के शासकों का वर्णन मिलता है। • रचयिता – ब्रह्मसोम (मित्रसोम के पुत्र) • लेखक - पूर्वा

दस्तूर कौमवार [वनपाल -2022]	जयपुर		• दस्तूर कौमवार जयपुर राज्य के अभिलेखों की महत्वपूर्ण अभिलेख श्रृंखला है • जयपुर रियासत की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और धार्मिक स्थिति की जानकारी मिलती है।
कणसवा अभिलेख	कोटा	738 ई.	• मौर्य वंशी राजा धवल का उल्लेख (शायद राजस्थान का अंतिम मौर्य शासक)।
ग्वालियर प्रशस्ति [2nd Grade -2023/COPA -2019]		880 ई.	• मिहिरभोज प्रथम की देंन • संस्कृत एवं ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण • लेखक – भट्टधनिक का पुत्र बालादित्य • गुर्जर प्रतिहारों के वंशावलियों एवं उपलब्धियों का उल्लेख मिलता है।
प्रतापगढ़ अभिलेख	प्रतापगढ़	946 ई.	• गुर्जर प्रतिहार नरेश महेन्द्रपाल की उपलब्धियों का वर्णन है।
अचलेश्वर प्रशस्ति	आबू		• इसमें पुरुष के अग्निकुंड से उत्पन्न होने का उल्लेख है। • धूम्रराज को परमारों का मूल पुरुष या आदि पुरुष माना जाता है।
लूणवसही की प्रशस्ति	आबू-देलवाड़ा	1230 ई.	• भाषा - संस्कृत • इसमें आबू के परमार शासकों और वास्तुपाल तेजपाल के वंश का वर्णन है
नाथ प्रशस्ति [वनपाल – 2022]	लकुलिश मंदिर (उदयपुर)	971 ई.	• मेवाड़ के इतिहास का वर्णन • भाषा – संस्कृत • लिपि - देवनागरी
नेमीनाथ की प्रशस्ति	आबू	1230 ई.	• रचयिता - सोमेश्वरदेव (शुभचन्द्र) [Raj Police -2018] • सुरथोत्सव के रचयिता (शुभचन्द्र) –[2nd Grade – 2022] • इसे सूत्रधार चण्डेश्वर ने खोदा था।
रसिया की छतरी का लेख	चित्तौड़गढ़	1331	• रचयिता - प्रियपटु के पुत्र नागर जाति के ब्राह्मण वेद शर्मा। • उत्कीर्णकर्ता - सूत्रधार सज्जन • इसमें गुहिल को बापा का पुत्र बताया गया है।
माचेड़ी की बावली का दूसरा शिलालेख	अलवर	1458 ई.	• इसमें अलवर में बड़ गुर्जर वंशी रजपालदेव राज्य पर अधिकार होने का वर्णन है।
बरबथ का लेख	बयाना	1613-14 ई.	• इसमें अकबर की पत्नी मरियम उस -ज़मानी के द्वारा बरबथ में एक बाग और बावड़ी का निर्माण करने का उल्लेख है।
बर्नाला यूप स्तम्भ लेख	जयपुर	227 ई.	
चाकसु अभिलेख	जयपुर	813 ई.	• गुहिल वंशीय भरत्रभट्ट और उसके वंशजों का वर्णन है। • सूत्रधार – देइआ
बुचकला अभिलेख	जोधपुर(बिलाडा)	815 ई.	• वत्सराज के पुत्र नागभट्ट प्रतिहार का उल्लेख है।
राजौरगढ़ अभिलेख	अलवर	960 ई.	• मथनदेव प्रतिहार
हर्ष अभिलेख [JEN -2016]	सीकर	973 ई.	• चौहानों के वंशक्रम का उल्लेख । • हर्षनाथ (सीकर) मंदिर का निर्माण अल्लट द्वारा करवाये जाने का उल्लेख। • वागड़ को वार्गट कहा गया।
रसिया की छतरी का शिलालेख [प्रवक्ता (DoTE) – 2021]	चित्तोड़गढ़	1274 ई.	• गुहिल वंशीय शासकों की जानकारी (बप्पा से नरवर्मा तक)। • रचनाकार- प्रियपटु के पुत्र वेद शर्मा
डूंगरपुर की प्रशस्ति	डूँगरपुर	1404 ई	• उपरगाँव (डूँगरपुर) में में संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण। • वागड़ के राजवंशों के इतिहास का वर्णन।

सिक्के

- **सर्वप्रथम राजस्थान** के **चौहान वंश** ने मुद्राएँ जारी की।
  - **ताँबे के सिक्के -** द्रम्म और विशोपक
  - **चाँदी के सिक्के** - रूपक
  - **सोने के सिक्के** - दीनार
- मेवाड़ में प्रचलित सिक्के –
  - **ताँम्बे के सिक्के-** ढिंगला, भिलाडी. त्रिशुलिया, भिन्डीरिया, नाथद्वारिया।
  - **चाँदी के** सिक्के- द्रम्म , रूपक।
- अकबर ने राजस्थान में **सिक्का एलची** जारी किया। (चित्तोड़ विजय के बाद)।
  - **अकबर ने आमेर में सर्वप्रथम टकसाल** खोलने की अनुमति दी।
- **राजस्थान के प्राचीन सिक्के**
- अंग्रेजों के समय जारी **मुद्राओं में कलदार** (चाँदी) **सर्वाधिक प्रसिद्ध**

महत्वपूर्ण तथ्य

- तत्कालीन राजपूताना की रियासतों के सिक्कों के विषय पर **केब** ने **1893 ई**.में "**द करेंसी ऑफ द हिंदू स्टेट ऑफ राजपूताना"** नामक पुस्तक लिखी।
- रैढ़ (टोंक) में खुदाई के दौरान 3075 चाँदी के पंचमार्क सिक्के मिले हैं इन सिक्कों को धरण या पण कहा जाता था।
- समयकाल 600 ई. पू. - 200 ई. पू. [ARO -2022]
- रंगमहल (हनुमानगढ़) से आहत मुद्रा एवं कुषाण कालीन मुद्राएँ मिली है।
- बैराठ सभ्यता (कोटपुतली-बहरोड़) से भी अनेक मुद्राएँ मिली है जिनमें से 16 मुद्राएँ प्रसिद्ध यूनानी शासक मिनेण्डर की है।
- इंड्रो - सासानी सिक्कों की भारतीयों ने गधिया नाम से पहचान की है जो चाँदी और ताम्र धातु के बने हुए होते थे।
- मेवाड़ के स्वरूपशाही और मारवाड़ के आलमशाही सिक्के ब्रिटिश प्रभाव वाले थे जिनमें "औरंग आराम हिंद एवं इंग्लिस्तान क्वीन विक्टोरिया" लिखा होता था।
- राजस्थान में सर्वप्रथम 1900 ई. में स्थानीय सिक्कों के स्थान पर कलदार का चालान जारी हुआ।

रियासत	सिक्के
बीकानेर	गजशाही सिक्के (चाँदी), गंगाशाही (विक्टोरिया एम्प्रैस) [RAS -2013]
जैसलमेर	मुहम्मदशाही, अखैशाही, डोडिया (ताँबा) [जेल प्रहरी – 2017]
उदयपुर	स्वरूपशाही, चांदोडी, शाहआलमशाही, ढीग्गाल, त्रिशुलियाँ, भिलाडी, कर्षापण, भीड़रिया, पदमशाही, ' गाधिया' [अन्वेषण -16 /जेल प्रहरी –18]
चितौड़	एलची, चांदोड़ी रुपया, अठन्नी, चवन्नी, दो अन्नी,एक अन्नी [JEN -2020]
डूँगरपुर	उदयशाही, त्रिशूलिया, पत्रिसीरिया, चित्तौडी, सालिमशाही सिक्का।
बाँसवाड़ा	सालिमशाही सिक्का , लक्ष्मणशाही
प्रतापगढ	सालिमशाही, मुबारकशाही, सिक्का मुबारक, लंदन सिक्का।
शाहपुरा	संदिया, मधेशाही, चित्तौडी, भिलाड़ी सिक्का
कोटा	गुमानशाही, हाली, मदनशाही सिक्के
झालावाड	पुराने और नए मदनशाही सिक्के
करौली	माणकशाही
धौलपुर	तमंचाशाही सिक्का
भरतपुर	शाहआलमा
अलवर	अखैशाही, रावशाही सिक्के, ताँबे के रावशाही सिक्का, अंग्रेजी पाव आना सिक्का [जेल प्रहरी –18]
जयपुर	झाड़शाही, मुहम्मदशाही, हाली। [CET -2023]
जोधपुर	विजयशाही, भीमशाही, गदिया, गजशाही, लल्लूलिया रुपया।
सोजत	लल्लूलिया (पाली) एवं लाल्लुशाही सिक्के [जेल प्रहरी –18]
सलूम्बर	पदमशाही (ताम्रमुद्रा)
किशनगढ़	शाहआलमी
बूँदी	रामशाही सिक्का ग्यारह- सना, कटारशाही, चेहरेशाही, पुराना रुपया।
नागौर की टकसाल	अमरशाही, कुचामनिया सिक्का (कुचामन टकसाल) इसे **इक्तिसंदा, बोपुशाही, बोरसी** भी कहते है। [Patwar Mains – 2016]
पाली	बिजैशाही
सिरोही	चाँदी की भिलाड़ी, ताँबे का ढब्बूशाही
सलूम्बर	पदमशाही Coll Lect-2016/ BCI -2022

ताम्रपत्र

राजस्थान के प्रमुख ताम्र पत्र

ताम्र पत्र	काल	के बारे में
धुलेव का दान पत्र	679 ई.	• किष्किंधा (कल्याणपुर) के राजा भेटी द्वारा उब्बरक नामक गांव को भट्टिनाग नामक ब्राह्मण को अनुदान देने का उल्लेख।
ब्रोच गुर्जर ताम्रपात्र	978 ई.	• गुर्जर वंश के सप्तसैंधव भारत से लेकर गंगा कावेरी तक के अभियान का वर्णन। • इसके आधार पर कनिंघम ने राजपूतों को कुषाणों की यू-ए-ची जाति माना।

मथनदेव का ताम्र-पत्र	959 ई.	• मंदिर के लिए भूमि दान की व्यवस्था का उल्लेख है।
वीरपुर का दान पत्र	1185 ई.	• इसमें गुजरात के चालुक्य राजा भीमदेव के सामंत वागड़ के गुहिल वंशीय राजा अमृतपालदेव के सूर्यपर्व पर भूमिदान देने का उल्लेख है।
आहड़ ताम्र-पत्र	1206 ई.	• गुजरात के सोलंकी राजा भीमदेव (द्वितीय) का है। • गुजरात के मूलराज से भीमदेव द्वितीय तक सोलंकी राजाओं की वंशावली दी गई है ।
पारसोली का ताम्र-पत्र	1473 ई.	• महाराणा रायमल के समय का है। • भूमि की किस्मों का उल्लेख – पीवल, गोरमो, माल, मगरा । ○ यह भूमि उस समय की सभी लागतों से मुक्त थीं।
खेरादा ताम्र-पत्र	1437 ई.	• एकलिंगजी में राणा कुंभा द्वारा किए गए प्रायश्चित, उस समय का दान, धार्मिक स्थिति की जानकारी मिलती है।
चीकली ताम्र-पत्र	1483 ई.	• किसानों से एकत्र किए जाने वाले 'विविध लाग-बागों' को दर्शाता है। • पटेल, सुथार और ब्राह्मणों द्वारा खेती का वर्णन। [JEN -2016]
ढोल का ताम्र-पत्र	1574 ई.	• महाराणा प्रताप के समय का है जब उन्होंने ढोल नामक एक गाँव की सैन्य चौकी का प्रबंधन किया था और अपने प्रबंधक जोशी पुणो को ढोल में भूमि अनुदान दिया।
पुर का ताम्र-पत्र	1535 ई.	• जौहर में प्रवेश करते समय हाड़ी रानी कर्मवती द्वारा दिए गए भूमि अनुदान के बारे में जानकारी । [वनरक्षक – 2022]
कोघाखेड़ी (मेवाड़) का ताम्रपत्र	1713 ई.	• कोघाखेड़ी गाँव का उल्लेख जिसे महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय ने दिनकर भट्ट को हिरण्याशवदान में दिया था।
गाँव पीपली (मेवाड़) का ताम्रपात्र	1576 ई.	• स्पष्ट करता है कि हल्दीघाटी के युद्ध के बाद, महाराणा प्रतापसिंह ने मध्य मेवाड़ के क्षेत्र में लोगों को बसाने का काम शुरू किया।
कीटखेड़ी (प्रतापगढ़) का ताम्रपत्र	1650 ई.	• कीटखेड़ी गाँव के भट्ट विश्वनाथ को दान देने से संबंधित है। • राजमाता चौहान द्वारा निर्मित गोवर्धननाथजी के मंदिर की प्रतिष्ठा के समय दिया गया था।
डीगरोल गाँव का ताम्र-पत्र	1648 ई.	• महाराणा जगतसिंह के काल का है।
रंगीली ग्राम (मेवाड़) का ताम्रपत्र	1656 ई.	• महाराणा राजसिंह के समय का है। ○ उन्होंने गंधर्व मोहन को रंगीला नामक गाँव दिया ○ गाँव में खड़, लाकड और टका की लागत को हटा लिया गया ।
बेडवास गाँव का दान पत्र	1643 ई.	• समरसिंह (बाँसवाड़ा) के काल का है। • हल भूमि दान का उल्लेख है।
राजसिंह का ताम्रपत्र	1678 ई.	• महाराणा राज सिंह के समय का है।
बेंगू का ताम्रपत्र	1715 ई.	• महाराणा संग्राम सिंह के समय का है।
बेडवास का ताम्र पत्र	1559 ई.	• उदयपुर बसाने के संवत् 1616 की पुष्टि पर प्रकाश डालता है।
लावा गाँव का ताम्रपत्र	1558 ई.	• महाराणा उदयसिंह ने लड़कियों की शादी के अवसर पर 'मापा' कर नहीं लेने आदेश ।

पुरालेखागारीय स्त्रोत

राज्य अभिलेखागार बीकानेर में निम्नलिखित बहियाँ **संग्रहीत** है -

- **हकीकत बही**- राजा की दिनचर्या का उल्लेख
- **हुकूमत बही** - राजा के आदेशों की नकल
- **कमठाना बही** - भवन व दुर्ग निर्माण संबंधी जानकारी
- **खरीता बही** - पत्राचारों का वर्णन

साहित्यिक स्त्रोत

महत्वपूर्ण तथ्य

- **रास -** 11वीं शताब्दी के आसपास जैन कवियों द्वारा रचा गया ।
- **रासो** - रास के समानांतर राजाश्रय में रासो साहित्य लिखा गया जिसके द्वारा तत्कालीन, ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थितयों के मूल्यांकन की आधारभूत पृष्ठभूमि निर्मित हुई ।

- **वेलि** - राजस्थानी वेलि साहित्य में यहाँ के शासकों एवं सामन्तों की वीरता, इतिहास, विद्वता, उदारता, प्रेम-भावना, स्वामिभक्ति, वंशावली आदि घटनाओं का उल्लेख होता है ।
- **ख्यात** - ख्यात का अर्थ होता है ख्याति अर्थात् यह किसी राजा महाराजा की प्रशंसा में लिखा गया ग्रंथ ।
  - यह वंशावली व प्रशस्ति लेखन का विस्तृत रुप होता है।
  - ख्यात साहित्य गद्य में लिखा जाता है।

पृथ्वीराज रासो, चन्दबरदाई

- यह ग्रन्थ पृथ्वीराज चौहान के दरबारी कवि चन्दबरदाई द्वारा पिंगल भाषा में लिखा गया जिसे उसके पुत्र जल्हण द्वारा पूरा किया गया।
- इसमें गुर्जर-प्रतिहार, परमार, सोलंकी/ चालुक्य, और चौहानों की गुरु वशिष्ठ, विश्वामित्र आदि के आबू पर्वत के अग्निकुंड से उत्पत्ति का उल्लेख है।

मुहणोत नैणसी री ख्यात

- यह मारवाड़ी और डिंगल में लिखा गया है।
- नैणसी (1610- 70 ई.) जोधपुर महाराजा जसवंतसिंह प्रथम के दरबारी कवि एवं दीवान थे।
- इसमें समस्त राजपूताने सहित जोधपुर के राठौड़ो का विस्तृत इतिहास लिखा गया है।

नैणसी को मुंशी देवी प्रसाद द्वारा "राजपूताने का अबुल फजल" कहा गया।

मारवाड़ रा परगना री विगत / गावां री ख्यात

- मुहणोत नैणसी द्वारा कृत है।
- बहुत बड़ी होने के कारण इसे "सर्वसंग्रह" भी कहा जाता है।
- इसे "राजस्थान का गजैटियर" भी कहा जाता है।

बांकीदास री ख्यात / जोधपुर राज्य री ख्यात

- लेखक - बांकीदास (जोधपुर के महाराजा मानसिंह राठौड़ के दरबारी कवि)।
- राठौड़ो और अन्य वंशों का विवरण है।
- मारवाड़ी और डिंगल भाषा में लिखी गई है।

दयालदास री ख्यात

- लेखक - दयालदास सिढायच (बीकानेर के महाराज रतनसिंह के दरबारी कवि)।
- इसे मारवाड़ी (डिंगल) भाषा में लिखा गया है।
- इसमें बीकानेर के राठौड़ो के प्रारंभ से लेकर महाराजा सरदारसिंह तक का इतिहास लिखा गया है (2 भाग)

मुण्डियार री

- राव सीहा के द्वारा मारवाड में राठौड़ राज्य की स्थापना से लेकर महाराजा जसवंतसिंह प्रथम तक का वृत्तांत मिलता है।

कवि राजा री ख्यात

- इस ख्यात में जोधपुर के नरेश महाराजा जसवंत सिंह प्रथम के शासन काल के बारे मे विस्तारपूर्वक बताया गया है।
- इसके अतिरिक्त राव जोधा, रायमल, सूरसिंह के मंत्री भाटी गोविन्द दास के उपाख्यान भी शामिल है।

किशनगढ़ री ख्यात

- किशनगढ़ के राठौड़ों का इतिहास

भाटियों री ख्यात

- जैसलमेर के भाटियों का इतिहास

राजस्थानी साहित्य	साहित्यकार
पृथ्वीराजरासो	चन्दबरदाई
बीसलदेव रासो	नरपति नाल्ह
हम्मीर रासो	शारंगधर
संगत रासो	गिरधर आंसिया
वेलि क्रिसन रुकमणी री	पृथ्वीराज राठौड़
अचलदास खीची री वचनिका	शिवदास गाडण
पाथल और पीथल	कन्हैया लाल सेठिया
धरती धोरा री	कन्हैया लाल सेठिया
लीलटांस	कन्हैया लाल सेठिया
रूठीराणी, चेतावणी रा चूंगठिया	केसरीसिंह बारहठ
राजस्थानी कहांवता	मुरलीधर व्यास
राजस्थानी शब्दकोश	सीताराम लीलास
नैणसी री ख्यात	मुहणौत नैणसी
मारवाड रा परगाना री विगत	मुहणौत नैणसी
राव रतन री वेलि (बूँदी के राजा रतनसिंह के बारे में)	कल्याण दास
कान्हड़दे प्रबंध	कवि पद्मनाभ (अलाउद्दीन के जालौर आक्रमण का वर्णन)
राव जैतसी रो छंद	बीठू सूजा
राजरूपक	वीरभान
सूरज प्रकाश	करणीदान (जोधपुर महाराजा अभयसिंह के दरबारी कवि)
वंश भास्कर	सूर्यमल्ल मिश्रण

संस्कृत साहित्य	साहित्यकार
पृथ्वीराज विजय	जयानक (कश्मीरी)
हम्मीर महाकाव्य	नयन चन्द्र सूरी
हम्मीर मदमर्दन	जयसिंह सूरी
कुवलयमाला	उद्योतन सूरी

वंश भास्कर /छंद मयूख	सूर्यमल्ल मिश्रण (बूँदी)
नृत्य रत्नकोष	राणा कुंभा
भाषा भूषण	जसवंत सिंह
एकलिंग महात्मय	कुम्भा
ललित विग्रहराज	कवि सोमदेव
राजवल्लभ	मण्डन (महाराणा कुम्भा के मुख्य कवि)
राजविनोद	भट्ट सदाशिव
कर्मचन्द्र वंशोत्कीर्त्नकं काव्यम्	जयसोम

अमरसार	पंडित जीवधर
राजरत्नाकर	सदाशिव
अजितोदय	जगजीवन भट्ट (जोधपुर राजा अजीतसिंह के दरबारी कवि)।

फारसी साहित्य	साहित्यकार
तारीख -ए-राजस्थान	कालीराम कायस्थ
वाकीया-ए-राजपूताना	मुंशी ज्वाला सहाय

महत्वपूर्ण ऐतिहासिक युद्ध

वर्ष	युद्ध	के बीच हुआ	परिणाम
1191	तराइन का प्रथम युद्ध	पृथ्वीराज-मोहम्मद गौरी	गौरी की हार हुई
1192	तराइन का द्वितीय युद्ध	पृथ्वीराज-मोहम्मद गौरी	पृथ्वीराज की हार हुई
1301	रणथंभौर का युद्ध	हम्मीरदेव-अलाउद्दीन खिलजी	हम्मीर की हार
1303	चित्तौड़ का युद्ध	राणा रतन सिंह-अलाउद्दीन खिलजी	राणा रतन सिं की हार
1308	सिवाना का युद्ध	सातलदेव चौहान-अलाउद्दीन खिलजी	साहलदेव की हार
1311	जालोर का युद्ध	कान्हड देव – अल्लाउद्दीन खिलजी	कान्हड देव की हार
12 FEB 1527	बयाना का युद्ध	राणा सांगा -बाबर	राणा सांगा की विजय
1527	खानवा का युद्ध	राणा सांगा - बाबर	राणा सांगा की हार
1544	सुमेल का युद्ध (जैतारण)	मालदेव-शेरशाह सूरी	मालदेव की हार
1576	हल्दीघाटी का युद्ध	महाराणा प्रताप-अकबर	महाराणा प्रताप की हार
1582	दिवेर का युद्ध	महाराणा प्रताप, अमर सिंह - मुगल सेना	महाराणा विजयी
1644	मतीरे की राड़	अमरसिंह (नागौर)- कर्णसिंह	अमरसिंह विजयी
1803	लसवारी का युद्ध	दौलत राव सिंधिया-लॉर्ड लेक	सिंधिया की हार

अन्य पुरावशेष

- **पुरानों में मत्स्य जनपद (**अलवर, भरतपुर, जयपुर, और दौसा) **का उल्लेख मिलता है जिसकी राजधानी विराट नगर (**बैराट– टपुतली – बहरोड़ जिला) थी।
- **स्कंदपुराण** - भारतीय राज्यों की एक सूची देता है जिसमें राजस्थान के कुछ राज्य शामिल हैं - शाकम्भरी सपादलक्ष; मेवाड़ सपादलक्ष; तोमर सपादलक्ष: वागुरी (बेडेड); विराट (बैराट); और भद्र।
- ऑरेल स्टैन अपने सर्वेक्षण कार्य को अप्रैल, 1942 में 'दी जियोग्राफिकल जनरल' में शीर्षक भी 'ए सर्वे वर्क ऑफ एनसियेण्ट साइट्स एलोंग दी लोस्ट सरस्वती रिवर' रखा। [RAS- 2013]
- **चीनी यात्री युआनच्वांग** - पो-ली-ये-ता-लो नामक स्थान का उल्लेख किया है जिसे विराट या बैराट (कोटपुतली -बहरोड़) के समकक्ष माना जाता है।
- रचनाओं द्वारा राजस्थान की **राजनीतिक**, **सामाजिक**, **आर्थिक** और **धार्मिक स्थितियों** पर **प्रकाश**।

2 CHAPTER राजस्थान का प्रारम्भिक इतिहास और राजपूतों की उत्पत्ति

- **सरस्वती और दृषद्वती नदी घाटियों** से सभ्यता का केन्द्र **पूर्व और दक्षिण की ओर** विस्थापित हो गया और **आर्य** इन नदी घाटियों में बस गये।
  - सप्त-सैन्धव प्रदेश क्षेत्र भूरे मृद्भांड वाली **आर्य संस्कृति का प्रमुख केन्द्र** बन गया।
- **अनूपगढ़** से प्राप्त **मृदभाण्डों के टुकड़े** हडप्पा से भिन्न प्रकार के हैं।
- **डॉ. गोपीनाथ शर्मा** - **महाभारत** तथा **पौराणिक गाथाओं** से प्रमाणित होता है कि **जांगल** (बीकानेर), **मरूकान्तार** (मारवाड़) आदि भागों से **बलराम** और **कृष्ण** गुजरे थे जो आर्यो की **यादव शाखा** से संबंधित थे।
- **हिस्ट्री ऑफ मेडीवल हिन्दू इण्डिया** (सी.वी .वैद्य) - **महाभारत** की शाल्व जाति की बस्तियाँ **भीनमाल** में **सांचौर** और **सिरोही** के आसपास मिलती है।

राजस्थान का प्रारंभिक ऐतिहासिक काल

महाजनपद काल (1000 ईसा पूर्व -300 ईसा पूर्व):

- **वैदिक भारत** का अंत **भाषाई**, **सांस्कृतिक** और **राजनीतिक** परिवर्तनों द्वारा चिह्नित।
- 6 वीं शताब्दी ईसा पूर्व तक, **राजनीतिक इकाइयाँ** बड़े राज्यों में समेकित हो गईं - **महाजनपद**।
- **महाजनपद युग** - दूसरे शहरीकरण की अवधि।
- **राजस्थान** -आधुनिक राज्य नीचे वर्णित कई महाजनपदों का हिस्सा था:

जनपद	विवरण

मच्छा/ मत्स्य महाजनपद [JEN -22/ RPC–22]	• **जिले -** जयपुर, अलवर और भरतपुर के आधुनिक हिस्से।
	• **राजधानी** - विराटनगर (बैराठ)
	  ○ इसका नाम संस्थापक **राजा विराट** के नाम पर रखा गया ।
	• 5वीं शताब्दी में पड़ौसी **चेदी साम्राज्य** के नियंत्रण में आ गया।
	• **सर्वप्रथम उल्लेख** - ऋग्वेद में
	  ○ **मत्स्य निवासी** - सुदास का क्षत्रु
	• **मीणाओं** का शासन

शूरसेन महाजनपद [REET - 18]	• **राजधानी** - मथुरा। • **जिले** - अलवर, भरतपुर, डीग, धौलपुर और करौली। • **यदुवंशी शासको** का शासन ○ **भगवान कृष्ण** से संबंधित
कुरु महाजनपद	• **राजधानी** - इंद्रप्रस्थ। • उत्तरी **अलवर क्षेत्र** का भाग ।
अर्जुनायन जनपद [JEN -20]	• **क्षेत्र** : वर्तमान भरतपुर-अलवर • **शुंग काल** (185 - 73 ईसा पूर्व) के दौरान एक **राजनीतिक शक्ति** के रूप में उभरे।

राजन्य जनपद	• वर्तमान **भरतपुर क्षेत्र** में विस्तृत
	• स्थिति पर विभिन्न मत:
	  ○ **कनिंघम** - मथुरा के निकट
	  ○ **स्मिथ** - पूर्व धौलपुर राज्य राजन्य का मूल घर है।
	  ○ **रैपसन** - उसी क्षेत्र को अर्जुनायण और मथुरा के राजाओं के क्षेत्राधिकार के रूप में वर्णित।

शिवि जनपद [EO/RO - 23/ASO - 22]	• **क्षेत्र**- माध्यमिका या मज्झिमिका (चित्तौड़)। • **अन्य नाम** - प्राग्वाट , मेदपाट • **राजधानी** - शिवपुर । • **उल्लेख** - पाणिनि के अष्टाध्यायी में।
मालव जनपद [Raj Police – 2018]	• **क्षेत्र**- टोंक जिला स्थित नगर व् कर्कोटनगर • राजस्थान के जनपदों में सर्वाधिक सिक्के **मालव जनपद** से प्राप्त है। • **राजधानी**- मालवनगर
शाल्व	• **क्षेत्र**- मत्स्य राज्य के उत्तर में अलवर में । • **राजधानी**- मृत्तिकावती
यौद्धेय [Agri Of - 21/JEN - 22/AAO - 22]	• **सिंधु नदी और गंगा नदी** के बीच के क्षेत्र में स्थित। • **क्षेत्र**: वर्तमान गंगानगर और हनुमानगढ़ जिले व बीकानेर के कुछ भाग । • उल्लेख **पाणिनि के अष्टाध्यायी और गणपथ** में मिलता है। • रंगमहल में नहर के अवशेष • बाद में **गुप्त साम्राज्य** के अधीन • गणतांत्रिक जनजाति के सर्वाधिक मिक्के

महाभारतकालीन सभ्यता

- **कुरु जांगल** - वर्तमान बीकानेर [aj Police – 18]
- **मद्र जांगल** - जोधपुर
- इस काल में **शाल्व जाति** की बस्तियों का **उल्लेख** मिलता है जो भीनमाल, सांचौर और सिरोही के निकट स्थित थी।

मौर्य युग

- मत्स्य जनपद का भाग **मौर्य शासकों के अधीन** आ गया ।
- **अशोक का भाब्रू शिलालेख** - अति-महत्त्वपूर्ण है।
  - **राजस्थान** में मौर्य शासन तथा **अशोक के बौद्ध** होने की पुष्टि करता है।
- अशोक के उत्तराधिकारी **कुणाल के पुत्र सम्प्रति** द्वारा बनवाये गये मंदिर मौर्य वंश के प्रभाव की पुष्टि करता है।
- **कुमारपाल प्रबंध** तथा अन्य **जैन ग्रन्थ** से पता चलता है कि चित्तौड़ का किला व एक चित्रांग तालाब **मौर्य राजा चित्रांग** द्वारा बनवाया गया था।
- **चित्तौड़** - मानसरोवर तालाब - **मौर्यवंशी राजा मान** का शिलालेख।
- **जी.एच. ओझा**- चित्तौड़ का किला मौर्य वंश के **राजा चित्रांगद** ने बनाया था।
  - 8वीं शताब्दी में **बापा रावल** ने **मौर्य वंश के अंतिम राजा मान** से यह किला छीना था।
- **कोटा के कणसवा गाँव** - **मौर्य राजा धवल** का शिलालेख - राजस्थान में मौर्य राजाओं एवं उनके सामंतों का प्रभाव

- कुषाण शासकों के सम्पर्क ने राजस्थान के पत्थर और मृण्मय मूर्ति-कला को एक नवीन मोड़ दिया जिसके नमूने अजमेर के नाद की शिव प्रतिमा, साँभर का स्त्री धड़ अश्व तथा अजामुख ह्याग्रीव या अग्नि की मूर्ति अपने आप में कला के अद्वितीय नमूने है। [Raj Police – 2018]

विदेशी जातियों का आक्रमण

- मौर्यों के बाद विदेशी जातियों के आक्रमण बढ़ गए।
- यौधेय वंश ने राजस्थान से कुषाण सत्ता को ख़त्म किया।
- 150 ई.पू. में यूनानी शासक मिनाण्डर ने मध्यमिका नगरी को अपने अधिकार में कर राज्य की स्थापना की।
- प्रथम शताब्दी ई.पू. में पश्चिमी राजस्थान में सीथियन (कुषाण, पल्लव, शक) आक्रमण आरम्भ हुए।

सिकंदर के आक्रमण के बाद राजस्थान (326 ई.पू.)

- 326 ईसा पूर्व - **सिकंदर** द्वारा **भारत पर आक्रमण**
  - कभी **राजस्थान** नहीं पहुँचा।
  - हालाँकि, आक्रमण ने **भारतीय इतिहास** को गहराई से प्रभावित किया।
- **प्रभाव**
  - कमजोर दक्षिण पंजाब की **गणतांत्रिक जनजातियाँ** - **मालव**, **शिवी और अर्जुनायन** राजस्थान चले आए ।
  - **पंजाब और राजस्थान** - कई कुलीन वर्गों, या आदिवासी गणराज्यों के केंद्र।
- सिक्कों के अनुसार, राजस्थान के **राजनीतिक रूप से सबसे महत्वपूर्ण गणराज्य:**

औदंबर, अर्जुनायन, मालव, कुणिंद, त्रिगर्त, अभिरस, यौद्धेय और शिबी (शिवी)।

गुप्तकाल

- **कुषाणों** का पतन → **प्रयाग** और **पाटलिपुत्र** में गुप्तों का आविर्भाव → **समुद्रगुप्त** और **चन्द्रगुप्त द्वितीय** बड़े प्रसिद्ध थे।
- **प्रयाग प्रशस्ति** - समुद्रगुप्त ने **यौद्धेय**, **मालव** एवं **आभीर** जनजातियों को पराजित किया किंतु प्रत्यक्ष नियंत्रण में नहीं लाया।
  - उसके स्थान पर **सर्वकर्मदान प्रणाम आज्ञाकरण की नीति** अधिरोपित की।

- बयाना (भरतपुर) से गुप्त शासकों की सर्वाधिक स्वर्ण मुद्राएं (लगभग 2000) मिली हैं।
- इनमें से सर्वाधिक सिक्क्के चंद्रगुप्त द्वितीय के हैं।

- **पश्चिमी भारत** - **शकों** का प्रभाव → **चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य** ,शक शासक **रूद्र सिंह** को पराजित करता है तथा → पश्चिमी भारत में **गुप्तों का आधिपत्य** स्थापित ।
- गुप्तों का **राजस्थान** में प्रत्यक्ष शासन नहीं
  - परंतु निश्चित रूप से राजस्थान में **गुप्तों का शासन** रहा होगा।
    - **जनजातीय राज्यों** की उपस्थिति ।
- **वरीके वंश**
  - 371 ई. के **विजयगढ़** (बयाना) **प्रस्तर शिलालेख** से विष्णुवर्धन नामक वरीक वंश के राजा का उल्लेख ।
  - **पिता** : यशोवर्धन
  - संभवतः **समुद्र गुप्त** के सामंत थे।
- **औलीकर वंश**
  - 423 ई. - **झालावाड़** से एक शिलालेख - दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में **औलीकर वंश का शासन** था।
  - लेख में **विष्णु वर्मन नामक शासक** का वर्णन था।
  - इस वंश का संबंध **वर्धन वंश** से भी जोड़ा जाता हैं।

हूणों का आक्रमण

- **गुप्त साम्राज्य** का पतन → **केन्द्रीय शक्ति** का अभाव → गणतंत्रीय जातियाँ **(मालव, यौद्धेय, शिवि)** आपस में लड़कर कमजोर।
- 5वीं शताब्दी का अंत - **हूण राजा तोरमाण** का राजस्थान पर आधिपत्य ।
  - इनके पुत्र **मिहिर कुल** ने विराटनगर के **बौद्ध विहारों** तथा गंगानगर क्षेत्र में **रंगमहल**, **बडोपल, पीर सुल्तान की थड़ी** आदि स्थानों से सभ्यता के चिन्ह नष्ट किये।
  - **बाडोली** (कोटा) - **मिहिर कुल** का बनवाया हुआ शिव मंदिर - जीर्ण-शीर्ण अवस्था में मौजूद है।
- बाद में राजस्थान के राजपूतों से घुल मिल गये और **राजपूतों से विवाह** संबंध भी स्थापित किये।
  - **गुहिल नरेश अल्लट** - हूण राजकुमारी हरियादेवी से विवाह।
- **हूण आक्रमण** का अंत - **मालवा के शासक यशोवर्मन** द्वारा
  - लगभग 532 ई. में हूणों को परास्त करने में सफल।

- 9वीं शताब्दी में उत्तर भारत में **पुष्यभूमि शासकों का वर्चस्व** - सम्राट हर्षवर्धन प्रमुख।
  - राजस्थान के अनेक अभिलेखों में **हर्ष संवत्** अंकित - **हर्ष के साम्राज्य का विस्ता**र चिन्हित।
- इसके बाद का काल - **राजपूत शक्ति का उदय** काल।

राजपूत युग एवं उत्पति सिद्धांत

- **वर्धन वंश के पतन** से लेकर भारत में दिल्ली सल्तनत की स्थापना का काल राजपूत काल के नाम से जाना जाता है।
  - **राजपूत काल:** 7वी - 12वीं शताब्दी। [Raj Police -22]
  - **तिथि क्रम** - 650 ई. से 1200 ई. के बीच।
- '**राजपूत**' शब्द भारत में **मुसलमानों के आने के बाद** प्रचलन में आया।
- **प्रमुख राजपूत राजवंश:**
  - मारवाड़ के प्रतिहार और राठौड़
  - अजमेर के चौहान
  - मेवाड़ के गुहिल
  - शाकम्बरी के चौहान
  - चित्तौड़ के मौर्य
  - भीनमाल और आबू के चौहान
  - जैसलमेर के भाटी
  - आमेर के कच्छवाह

राजपूतों की उत्पत्ति

- सम्राट हर्षवर्धन के बाद **राजस्थान की स्थिति केन्द्रीय सत्ता** के अभाव में विकट हो चली थी ।
  - **विदेशी जातियाँ** (दूसरी शताब्दी ई.पू. से 6ठी शताब्दी) धीरे-धीरे स्थानीय जातियों के साथ सम्मलित होने लगी
- **इनसे एक नई जाति** का जन्म हुआ।
  - **राजनीतिक व्यवस्था** - क्षत्रियों के रूप में ग्रहण
  - इन समूहों के नेता और अनुयायी - **राजपुत्र**।
  - बाद में **राजपूत** कहलाने लगे।
  - **निवास स्थान** - राजपूताना/ राजस्थान

    राजपूताना शब्द - जॉर्ज थॉमस (1800 ई.) द्वारा [Raj Police -20/ATP – 2022]
- 13वीं शताब्दी तक राजस्थान के बड़े भाग पर **राजपूतों का वर्चस्व** स्थापित हुआ।
- इनका **भील, मेव, मीणों** आदि से संघर्ष हुआ ।
  - जेता, कोट्या, डूंगरिया भील, मीणों तथा राजपूतों के मध्य संघर्ष के प्रमाण मिले।

अग्निवंशीय मत

- **चन्दबरदाई कृत पृथ्वीराज रासो**- राजपूतों अग्निवंशीय। [JEN -2020/ Animal Ass -2018]
  - **वशिष्ठ ऋषि** के यज्ञकुण्ड से राक्षस संहार हेतु **राजपूतों के चारों वंश प्रतिहार, परमार, चालुक्य और चौहानों** की उत्पत्ति । [IEO -2018]
- चारों राजपूत वंशों ने **विशुद्धता पुष्टि** के लिये इस मत को अपना लिया।
- अनेक इतिहासकार इस मत से सहमत नहीं थे।
  - 6 से 16वीं शताब्दी के **अभिलेखों और साहित्यिक ग्रन्थ** - चारों में से **तीन वंश सूर्यवंशी और चंद्रवंशी**।

सूर्य और चंद्रवंशीय मत

- **डॉ. ओझा:** राजपूतों की उत्पत्ति सूर्य और चंद्रमा से - **सूर्यवंशीय और चंद्रवंशीय**
- डॉ. दशरथ शर्मा भी इस का समर्थन करते हैं ।
- **आबू शिलालेख** - गुहिल वंशीय राजपूतों की उत्पत्ति रघुकुल से ।
- वंशावली लेखकों ने **राठौड़ों को सूर्यवंशीय** तथा **यादवों, भाटियों और चन्द्रावती के चौहानों को चंद्रवंशीय** बताया है।

वैदिक आर्यों की संतान का मत - सी.वी. वैद्य [3rd Grade 2009]

ब्राह्मण वंशीय मत - डॉ. डी.आर. भंडारकर, डॉ. गोपीनाथ शर्मा

मिश्रित अवधारणा - देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय

प्राचीन आदिम जातियों गोंड, खोखर, भर आदि के **वंशज** - स्मिथ

- वैद्य प्रतिहारों को जो गुर्जर कहा गया है वह जाति की संज्ञा से नहीं, वरन उनका गुजरात पर अधिकार होने से कहा गया है।
  - इसलिए यह मत उचित नहीं कि राजपूतों की उत्पत्ति गुर्जरों से हुई है।

विदेशी वंश से उत्पत्ति

- शक, कुषाण, हूण आदि विदेशी जातियों की संतान - **इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड**। [FSO – 2019]
  - **पुस्तक एनल्स एण्ड एन्टीक्वीटिज** - राजपूत शक और सीथियन।
  - **प्रमाण:** राजपूतों की प्रथायें जैसे सती प्रथा, अश्वमेघ यज्ञ, सूर्योपासना, शस्त्रों ओर घोड़ों की पूजा, आदि शकों से मिलती जुलती है।
- गुर्जर मानकर विदेशी वंशीय मत को मान्यता - **डॉ. भण्डारकर**
  - **प्रमाण**: पुराणों में गुर्जर और हूणों का वर्णन विदेशियों के सन्दर्भ में दिया गया है।
- **डॉ. गोपीनाथ शर्मा** - अग्निवंशीय प्रतिहार, परमार, चालुक्य और चौहान भी गुर्जर थे।
  - **प्रमाण:** राजोर अभिलेख में प्रतिहारों को गुर्जर कहा गया है।
  - **यू-ची (कुषाण) जाति के वंशज** - ब्रोचगुर्जर ताम्रपत्र के आधार पर कनिंघम [Patwar – 2016]

3 CHAPTER मेवाड़ का इतिहास

- **मेवाड़** - गुजरात और मध्य प्रदेश की सीमा से लगा **राजस्थान का दक्षिण पश्चिमी क्षेत्र**।
- **जिले:** भीलवाड़ा, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़ और उदयपुर
- **विस्तार-**
  - **उत्तर पश्चिम:** अरावली से घिरा हुआ।
  - **दक्षिणी क्षेत्र :** पहाड़ी - जंगलों से युक्त ।
- **मूल रूप से मेदपाट (**मेर/ मेद् जाति के अधीन) - समय के साथ भ्रष्ट रूप में मेवाड़ बन गया।
  - **अन्य नाम** - प्रग्वाट, शिवी, मेदपाट
- **संरक्षक देवता:** एकलिंगजी - गुहिलों द्वारा निर्मित 10वीं शताब्दी के सबसे पुराने मंदिरों में से एक।
  - **उदयपु**र के पास स्थित
  - वर्तमान मंदिर पूर्व मंदिर के खंडहरों पर
  - ग्रेनाइट में **शिव की 4 मुखी छवि** के लिए प्रसिद्ध।

मेवाड के महत्वपूर्ण शासक

गुहिल - सिसोदिया वंश

- **आदि पुरुष:** गुहिल/ गुहादत्त (566 ईस्वी) [Raj Police – 2020]
- **पिता**:शिलादित्य
- **माता:** पुष्पवती
- मुहणौत नैणसी ने गुहिलों की कुल **24 शाखाओं** का वर्णन किया है। [Prot Offi -2019]

बापा रावल

- बप्पा रावल का जन्म वि.सं. 769 (712-13 ई.) में माना जाता है।
- इस प्रकार **हारित ऋषि** के आशीर्वाद से **बापा को मेवाड़ का राज्य** प्राप्त हुआ।

  बप्पा की माता और पत्नी ने नागदा में शिव के दो मंदिर बनवाये जो अब सास- बहू के मंदिर के नाम से विख्यात है।
- राज प्रशस्ति के अनुसार बप्पा ने 734 ई. में चित्तौड़ के शासक मान मोरी को हराकर उस पर अधिकार कर लिया। [Raj Police -2022]
- **राजधानी** - नागदा
- **उपाधि** - शील, महेन्द्र, खुम्माण और कालभोज, राजगुरु, चक्कवै। [जेल प्रहरी – 2017]
- पूर्वजों की भाँति **सोने के सिक्के** चलाये जो वैभव का प्रतीक है।
- 734 ईस्वी - बापा ने मान मोरी को परास्त कर चित्तौड़ पर कब्ज़ा किया।
- **रावलपिंडी** का नाम उन्हीं के नाम पर पडा।
- उसने उदयपुर के निकट **कैलाशपुरी में एकलिंग (लकुलीश) जी के मंदिर** का निर्माण करवाया।

अल्लट

- **पिता:** भृत भट्ट
- 10वीं शताब्दी के आसपास **मेवाड़ प्रदेश का शासक** बना।
- ख्यातों में **आलु रावल** भी कहा गया।
- **आहड़ को दूसरी राजधानी** बनाया।
  - आहड़ में एक **वराह मंदिर का निर्माण** करवाया।
- **देवपाल परमार** को परास्त करने में सफलता प्राप्त की।
- **माता राष्ट्रकूटों की कन्या** - इसलिये उसे राष्ट्रकूटों का सहयोग भी प्राप्त था।
- **हूण कन्या हरियादेवी** से विवाह किया।
  - हूणों का भी सहयोग प्राप्त था।

  माना जाता है की अल्लट ने सर्वप्रथम मेवाड़ में नौकरशाही का गठन किया।

नरवाहन

- अल्लट की मृत्यु के बाद नरवाहन मेवाड़ का शासक बना ।
- इसके समय का शिलालेख (971 ई.) एकलिंगजी में स्थित लकुलीश मंदिर में प्राप्त हुआ है, जिसमें मेवाड़ की राजधानी नागदा को ही बताया गया है।
- आहड़ शिलालेख 977 ई. के अनुसार नरवाहन पराक्रमी योग्य, कलाप्रेमी, धीर, विजय का निवास स्थान और क्षत्रियों का क्षेत्र, शत्रुहन्ता ,वैभव निधि तथा विद्या का वेदी था।
- नरवाहन शिव का उपासक था।
- आहड़ अभिलेख (आटपुर) 977 ई. के अनुसार नरवाहन का विवाह चौहान राजा जेजय की पुत्री से होना बताया गया है।
- नरवाहन का उत्तराधिकारी सालिवाहन बहुत कम समय के लिए ही शासन कर पाया।
- डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा के अनुसार इसके वंशजों ने ही भावनगर , पालिताना, रेवाकाण्ठा एवं राजपीपला में गुहिल वंश का शासन स्थापित किया था।

उत्पत्ति के सिद्धान्त [School Lect – 2024]

- डॉ. गौरी शंकर ओझा गुहिलों को सूर्यवंशी मानते हैं,
- डी.आर. भण्डारकर एवं गोपीनाथ शर्मा मेवाड़ के गुहिलों को ब्राह्मण वंश से मानते हैं।

जैत्रसिंह (1213-53 ईस्वी) [JEN – 2022]

- **चीरवा शिलालेख** में इन्हें एक शक्तिशाली शासक के रूप में वर्णित किया गया है।
- **मेवाड़-नाडौल** के बीच की लड़ाई समाप्त की।
  - नाड़ौल के शासक **उदयसिंह द्वारा पौत्री रूपादेवी का विवाह** जैत्रसिंह के पुत्र तेजसिंह से किया गया।
- इनके समय दिल्ली के सुल्तान **इल्तुतमिश** ने **नागदा** पर आक्रमण किया (संभवत: 1222 ई. - 1229 ई . के मध्य)।

भुताला का युद्ध: 1227 ईसवी
- जैत्रसिंह और इल्तुतमिश के मध्य हुआ।
- जैत्रसिंह जीत गए

- **जैत्रसिंह** ने तुर्की सेना को भागने के लिये विवश कर दिया (1222 ई. और 1229 ई.) ।
  - जैत्रसिंह ने इल्तुतमिश को परास्त कर दिया परन्तु इस अभियान में **मेवाड़ की राजधानी नागदा** को भारी नुकसान उठाना पड़ा।
    - इसी वजह से जैत्रसिंह ने अपनी **राजधानी नागदा से चित्तौड़ स्थानांतरित** किया।
- **जैत्रसिंह का काल** - मध्यकालीन मेवाड़ के इतिहास में स्वर्णकाल।
- चित्तौड़ के सामरिक महत्व को समझ चारों ओर प्राचीरों से सुरक्षित करवाया।

तेजसिंह (1253-1273 ई.)

- **जैत्रसिंह का पुत्र** - 1253 ई. में मेवाड़ की गद्दी पर बैठा।
- **उपाधि:** ''परमभट्टारक'', महाराजाधिराज और ''परमेश्वर'।
- उनकी **रानी जयतल्लदेवी** ने चित्तौड़ में श्याम पार्श्वनाथ के मंदिर का निर्माण करवाया।
- उन्हीं के समय "श्रावक प्रतिक्रमणसूत्रचूर्णि" लिखी गई।

दिल्ली के **सुल्तान गयासुद्दीन बलबन** ने मेवाड़ पर **आक्रमण** किया।
- परन्तु उसको सफलता नहीं मिली।

समरसिंह (1273 - 1302 ई.)

- **तेजसिंह का पुत्र** ।
- **8 शिलालेख** - अपना प्रभाव बनाने के लिये छोटे राज्य के संबंध में कठोर नीति का अनुसरण ।

- समरसिंह ने तुर्कों को गुजरात से निकाला और गुजरात का उद्धार किया।

- राज्य में **जीवहिंसा रोक** दी थी।
- एक धर्मनिष्ठ और धार्मिक दृष्टि से **सहिष्णु शासक**।
- **प्रसिद्ध शिल्पी और कलाकार** - पदमसिंह, केलसिंह, कल्हण, कर्मसिंह ।

साका = जौहर + केसरिया
- **जौहर** – यह राजस्थान की प्राचीन प्रथा है जिसमें महिलाएं अपने स्वाभिमान और सम्मान की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर देती थी।
- **केसरिया** – जब वीरों को लगता था कि वे युद्ध नहीं जीत पाएंगे तब मरने-मारने की भावना लेकर सिर पर केसरिया धारण करते थे और युद्ध में उतर जाते थे।

रावल समरसिंह	
कुंभकर्ण	रतनसिंह
नेपाल के गुहिल बंश की स्थापना	1302 ई. to 1303 ई.

चितौड़ का युद्ध (1303 ई.)
- मेवाड़ के शासक रावल रतनसिंह और दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के मध्य । [Raj police – 2018]
- **अलाउद्दीन के आक्रमण के कारण:**
  - चितौड़ का सामरिक महत्त्व
    - गुजरात, मालवा, मध्यप्रदेश आदि भागों के व्यापारिक मार्ग यही से होकर जाते थे।
  - अलाउद्दीन की साम्राज्यवादी लिप्सा ।
  - रत्नसिंह की खूबसूरत पत्नी पद्मिनी को प्राप्त करने का उद्देश्य।
- इस युद्ध का वर्णन अमीर खुसरो के ग्रंथ खाजाइन-उल-फुतूह में मिलता है। [2nd Grade -2023/Jen -2022]

- **रावल समरिसंह के दो पुत्र थे:**
  - **कुंभकर्ण**
    - उन्होंने नेपाल में गुहिल वंश की स्थापना की।
    - नेपाल का राजवंश यही से निकला।
    - नेपाल के शासको ने 'राणा' की उपाधि धारण की।
  - **रावल रतनसिंह**
    - वह समरसिंह के बाद मेवाड़ का शासक बना।
    - इसका शासनकाल 1302 ई.- 1303 ई. तक का था।

रतन सिंह (1302-1303 ई.)
- **समरसिंह का पुत्र** - 1302 ई. के आसपास चित्तौड़ का शासक बना।
- 1303 ई .में अलाउद्दीन ने धोखे से रतनसिंह को बंदी बना लिया और उसे बाद में गोरा-बादल और पद्मिनी ने मुक्त करवाया। [2nd Grade – 2023]

- रतनसिंह के चित्तौड़ के युद्ध में वीरगति प्राप्त होने के पश्चात समूची रावल शाखा का अंत हो गया।
- मेवाड़ का रतनसिंह गुहिल वंशीय (गहलोत) रावल शाखा के अंतिम शासक थे। [जेल प्रहरी – 2017]

पद्मिनी की कथा
- **कथानक** मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा लिखित काव्य-ग्रन्थ पद्मावत से इस कथा का आरम्भ हुआ।
- सिंहल द्वीप के राजा **गन्धर्वसेन और रानी चम्पावती की पुत्री** थी।
- रतन सिंह के दरबार में तांत्रिक ब्राह्मण **राघव चेतन/ काला चेतन** ने खिलजी को पद्मिनी के बारे में बताया जिसकी वजह से अलाउद्दीन ने मेवाड़ पर आक्रमण किया।
- **मेवाड़ का प्रथम साका** - 1303 ईस्वी
  - पद्मिनी + 1600 अन्य औरतों ने **जौहर** कर लिया।
  - राजपूतों ने रतन सिंह के नेतृत्व में **केसरिया** धारण किया।

- चित्तौड़ पर विजय के पश्चात अलाउद्दीन ने चित्तौड़ को हस्तागत कर अपने बेटे खिज्र खां के नाम पर इसका नाम खिज्राबाद रखा और खिज्र खां को इसका प्रशासक बनाया। [PTI -2018/जेल प्रहरी - 2017]

गुहिल/गहलोत वंश की रावल शाखा के शासको का क्रम

बापा रावल-अल्लट -नरवाहन -जैत्रसिंह -तेजसिंह -समरसिंह -रतन सिंह [Raj Police – 2018]

सिसोदिया वंश एवं इसके प्रतापी शासक

हम्मीर (1326-1364 ई.)

- 1326 ई. में सिसोदा शाखा के राणा अरिसिंह के पुत्र **राणा हम्मीर** ने चित्तौड़गढ़ पर अधिकार कर लिया।
- इन्हें गुहिल वंश की सिसोदिया शाखा के आदिपुरुष कहा जाता है [पशुधन सहायक – 2022]
- **महाराणा/ राणा की उपाधि** धारण की।
- उसे कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति में हम्मीर को **विषम घाटी पंचानन** कहा गया [REET -2022]
  - **रसिक प्रिया** - "वीर राजा"
- उसने कई पड़ोसी राजाओं को हटाया और उनके **मैत्री संबंध** स्थापित किये।
- उसने चित्तौड़ में अन्नपूर्णा माता का मंदिर बनवाया।
- हम्मीर को **"मेवाड़ का उद्धारक"** कहा जाता है। [ATP – 2023]
- **सिंगोली (बाँसवाड़ा) का युद्ध**
  - हम्मीर और मुहम्मद बिन तुगलक के मध्य।
  - मुहम्मद बिन तुगलक परास्त हुआ।

क्षेत्रसिंह/ राणा खेता (1364-1382 ई.)

- **हम्मीर का ज्येष्ठ पुत्र**।
- अजमेर, जहाजपुर, माण्डल और छप्पन को अपने साम्राज्य का हिस्सा बनाया।
- **हाड़ौती के हाड़ाओं** को दबाया ।

लक्षसिंह (राणा लाखा) (1382-1421 ई.)

- राणा क्षेत्रसिंह के पुत्र।
- उनके समय **उदयपुर की पिछोला झील** का निर्माण छीतर बंजारे ने करवाया था।
- उसी के समय **जावर की खानों में चाँदी** का उत्खनन हुआ जिससे उसने कई किलों का निर्माण करवाया। [Jen -2022]
- **डोडिया राजपूतों** को अपने यहाँ आश्रय देकर उसने **राजपूत शक्ति को संगठित** करने का कार्य किया।

राणा चुंडा - 'मेवाड़ का भीष्म पितामह'

- इतिहास में उन्हें सिंहासन पर अपने अधिकारों का बलिदान देने और अपने वादे को निभाने के लिए जाना जाता है
- **राणा लाखा ने चूंडा** को **मोकल का रक्षक** नियुक्त किया।
- यह नियम बना दिया कि भविष्य में मेवाड़ के महाराणाओं के सभी पट्टों, परवानों और सनदों पर चूंडा और उसके वंशजों के भाले का निशान अंकित रहेगा।
- **चूंडा** को **अन्य अधिकार** भी दे दिए गए जैसे-
  - मेवाड़ के **16 ठिकानों में से 4** (सलूम्बर सहित) **चूंडा** को दे दिए गए।
  - **सलूम्बर का सामंत** ही मेवाड़ के राजा का राज्याभिषेक करेगा।
  - सलूम्बर का सामंत मेवाड़ सेना का सेनापति होगा।
  - राणा की अनुपस्थिति में सलुम्बर का सामंत **राजधानी की रक्षा** करेगा।

मोकल (1421-1433 ई.)

- महाराणा लाखा की मृत्यु के समय **मोकल केवल 12 वर्ष** का था।
  - अतः राजकार्य **चूंडा की देखरेख** में किया जाता था।
- चित्तौड़ में **विष्णु मंदिर** (द्वारिकानाथ) का निर्माण करवाया और **परमार भोज** द्वारा बनवाए गए त्रिभुवन **नारायण** (मोकल का मंदिर/ समाधिश्वर मंदिर) का जीर्णोद्धार करवाया।
- **श्री एकलिंग जी के मंदिर** के चारों ओर परकोटा बनवाया।
- **झीलवाड़ा** में **चाचा, मेरा, और महपा पंवार** द्वारा उसकी हत्या कर दी गयी।

महाराणा कुम्भा (1433-1468 ई.)

- **मोकल** एवं **सौभाग्यदेवी** का ज्येष्ठ पुत्र
- **रक्षक**: रणमल
- उसका **काल** - मेवाड़ के इतिहास में कला, साहित्य और स्थापत्य के क्षेत्र में **स्वर्ण युग** ।
- दो पीढ़ियों से **राठौडों का प्रभाव** जो मेवाड़ को जकड़े हुये था उससे छुटकारा दिलाने का श्रेय **महाराणा कुम्भा** हो ही जाता है।
- मेवाड़ के सरदारों ने **रणमल की प्रेयसी भारमली** को भी अपनी ओर मिलाकर **रणमल की 1438** ई .**में हत्या** करवा दी।
- इस प्रकार उन के **कूटनीतिक प्रयास** सफल रहे और मेवाड़ पर **राठौड़ों का प्रभाव कम** हो गया।

प्रारम्भिक विजय

- **रणकपुर के एक शिलालेख के अनुसार** कुम्भा ने सारंगपुरा, नागौर गागरोन, नरायण, अजयमेरू, मण्डोर, मांडलगढ़, बूँदी आदि किलों पर अधिकार कर लिया।
- पश्चिम में आबू को जीतकर गुजरात की ओर से अपनी स्थिति मजबूत की।
- कुम्भा ने पूर्व में हाड़ौती को अपने राज्य में शामिल कर अपनी सीमाओं को पूर्वी भाग तक विस्तृत किया।
- मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी को राणा कुंभा ने कई बार पराजित किया था [Raj Police 2020]

सारंगपुर का युद्ध - 1437 ईस्वी

- कुम्भा और मालवा (मांडू) के सुल्तान महमूद खिलजी के मध्य हुआ। (विजयी -कुम्भा) [JEN -2022]
- तत्कालीन कारण –
- मालवा के महपा पँवार को मेवाड़ को सौंपने से इंकार [ATO – 2021]
- इस उपलक्ष्य में राणा ने चित्तौड़ में **विजय स्तंभ** का निर्माण करवाया।
- **मालवा और गुजरात** की **संयुक्त सेनाओं** ने बाद में महाराणा को हटाने में सफलता प्राप्त की।

कुम्भा की उपाधियां [JEN /ARO -2022/Patwar -2021]

- अभिनव भारताचार्य. हिन्दू सुरताण (मुस्लिम शासकों द्वारा दी गई उपाधि), राणेराय, रायरासो/राणो रासो/ रायरायण (साहित्यकारों का आश्रयदाता), राजगुरू, हालगुरू / शैलगुरू (पहाड़ी दुर्गों का स्वामी), दानगुरू, छापगुरु (छापामार में पारंगत), चापगुरू, परमगुरू, धीमान, टोडरमल, सुरग्रामणी, रावराय , चाणेराय , महाराजाधिराज, नरपति, अश्वपति, गजपति, वीणा, वादन प्रवीण

आवल-बावल की संधि - 1453 ईस्वी

- कुम्भा + जोधा के मध्य हुई।
- मंडोर जोधा को वापस दे दिया गया।
- सोजत - मेवाड़ और मारवाड़ के मध्य सीमा स्थापित की गई ।
- कुम्भा के बेटे रायमल का विवाह जोधा की बेटी श्रृंगार कँवर से किया गया।

कुम्भा एवं गुजरात

नागौर युद्ध (1456 ई.)

- नागौर के पहले युद्ध में शम्सखां की सहायता के लिए भेजे गए गुजरात के सेनापति रायरामचंद्र व मलिक गिदई महाराणा कुम्भा से हार गए थे।
- नागौर के प्रथम युद्ध में राणा की जीत हुई और उसने नागौर के किले को नष्ट कर दिया।

बदनौर का युद्ध 1457

- इस युद्ध मे एक तरफ मालवा के शासक महमूद खिलजी, गुजरात के शासक शाह और दूसरी तरफ महारणा कुंभा थे।
- इस युद्ध में महाराणा कुंभा विजयी हुआ। इस विजय के उपलक्ष्य मे कुंभा ने बदनौर (ब्यावर) मे कुशाल माता का मंदिर बनवाया। इस विजय के उपलक्ष्य में महारणा कुंभा ने कुंभलगढ़ का किला बनवाया।

मालवा-गुजरात का संयुक्त अभियान/ चंपानेर की संधि (1456 ईस्वी)

- मालवा शासक महमूद खिलजी और गुजरात शासक कुतुबुद्दीन शाह के मध्य राणा कुम्भा के विरुद्ध। [वनरक्षक – 2022]
- उद्देश्य: कुंभा की शक्ति का पतन करना।
- दोनों राज्यों की सेनाओं ने बदनौर नामक स्थान पर राणा कुंभा से संघर्ष किया।
- कीर्ति-स्तम्भ-प्रशस्ति व 'रसिक प्रिया' के अनुसार इस मुकाबले में कुम्भा विजयी रहा।

नागौर-विजय (1458 ईस्वी)

- कुम्भा ने 1458 ई. में नागौर पर आक्रमण किया जिसका कारण श्यामलदास के अनुसार-
  - नागौर के हाकिम शम्सखां और मुसलमानों द्वारा बहुत गो-वध करना।
  - मालवा के सुल्तान के मेवाड़ आक्रमण के समय शम्सखां ने उसकी महाराणा के विरुद्ध सहायता की थी।
  - शम्सखां ने किले की मरम्मत शुरू कर दी थी। अतः महाराणा ने नागौर पर आक्रमण कर उसे जीत लिया।
  - नागौर विवाद ही मेवाड़ – गुजरात संघर्ष का प्रारंभिक कारण था [College Lect – 2019]

कुम्भलगढ़-अभियान (1458 ईस्वी)

- कुतुबुद्दीन का 1458 ईस्वी में कुम्भलगढ़ पर अंतिम आक्रमण हुआ जिसमें उसे कुम्भा से पराजित होकर लौटना पड़ा।

महमूद बेगड़ा का आक्रमण (1459 ईस्वी)

- कुतुबुद्दीन के बाद महमूद बेगड़ा गुजरात का सुल्तान बना।
- उसने 1459 ई. में जूनागढ़ पर आक्रमण किया।
- वहाँ का शासक कुम्भा का दामाद था।
  - अतः महाराणा उसकी सहायतार्थ जूनागढ़ गया और सुल्तान को पराजित कर भगा दिया।

महाराणा कुम्भा की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ

- उन्होंने 84 में से **32 किलों का निर्माण** करवाया।
  - **बसंती दुर्ग** (सिरोही के निकट)**, बैराट दुर्ग** (बदनौर के निकट), **अचलगढ़ दुर्ग** (आबू), **कुम्भलगढ़ दुर्ग** (राजसमंद), मचान दुर्ग [Lab Ass – 2022/ HM – 2018]
- **अचलगढ़ दुर्ग**
  - केन्द्रीय शक्ति को पश्चिमी क्षेत्र में अधिक सशक्त बनाने हेतु और सीमान्त भागों को सैनिक सहायता पहुँचाने हेतु आबू में 1509 में बनवाया गया। [Raj Police -2014]
- **कुम्भलगढ़ का दुर्ग**
- राणा कुम्भा को "राजस्थान की स्थापत्य कला का जन्मदाता" कहा जाता है। [JEN – 2021]
  - **शिल्पी -** मण्डन। [2nd Grade -2023]
    - **महत्वपूर्ण रचनाएँ-** देवमूर्ति प्रकरण, प्रसाद मण्डन, राजवल्लभ, रूपमण्डन, वास्तुमण्डन, वास्तुशास्त्र आदि।
  - **किले के अंदर लघु दुर्ग -** कटारगढ़ दुर्ग।
    - सबसे ऊँचा स्थान
    - कुम्भा का निवास
    - मेवाड़ की आँख भी कहा जाता है